

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



उत्तराखण्ड के हिमालयी जनपद बागेश्वर में औषधीय पौधों का पारंपरिक उपयोग,
महत्व एवं संरक्षण

सुरेन्द्र सिंह, भूगोल विभाग,
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत
हुक्कम सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खटीमा, उत्तराखण्ड, भारत
डी.एस. परिहार, भूगोल विभाग,
डी.एस.बी. कैम्पस, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत
नीरज कुमार, भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत
चन्द्र प्रकाश सिंह, अर्थशास्त्र विभाग,
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय एवं परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Corresponding Authors

सुरेन्द्र सिंह, हुक्कम सिंह, डी.एस. परिहार,
नीरज कुमार, चन्द्र प्रकाश सिंह,
उत्तराखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/09/2022

Revised on : -----

Accepted on : 24/09/2022

Plagiarism : 03% on 17/09/2022



Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment

Overall Similarity: 3%

Date: Sep 17, 2022

Statistics: 177 words Plagiarized / 6908 Total words

Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.



शोध सार

उत्तराखण्ड में धरातलीय विषमताओं ने न केवल इस भू-भाग के जनजीवन को प्रभावित किया है वरन् अक्षांशीय ऊँचाइयों, मिट्टी, ढाल की प्रवणता एवं मैदानी क्षेत्रों से हिमाच्छादित शिखरों तक सूक्ष्म जलवायु पेटियों ने विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों को भी जन्म दिया है, जिनके विभिन्न भागों का उपयोग आदिकाल से स्थानीय निवासी करते आ रहे हैं। जितनी जीवन रक्षक जड़ी-बूटियाँ यहाँ उपलब्ध हैं, उतनी विश्व के किसी भाग में देखने को नहीं मिलती। मध्य हिमालय की गोद में स्थित पर्वतीय क्षेत्र वनसंपदा के साथ-साथ वनौषधियों से भी परिपूर्ण है। कुछ मूल्यवान जड़ी-बूटियों का पता लगाने के पश्चात् उनको औषधि के रूप में परिणत किया जा चुका है, किन्तु अभी ऐसी बहुत सी मूल्यवान जीवन दायी जड़ी-बूटियों का पता लगाना शेष है, जिस दिशा में भी खोज का काम एक मिशन के रूप में चलाया जाये तो आशातीत परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उत्तराखण्ड में सन् 1972 से जड़ी-बूटियों के संग्रहण का कार्य सहकारिता विभाग के जड़ी-बूटी विकास योजना के तहत शुरू किया गया। सन् 1980 से जड़ी-बूटियों की संरक्षण के लिये जनपदवार भेषज सहकारी संघों की स्थापना की गई। वर्तमान में भेषज सहकारी संघों के अलावा कुछ अन्य संस्थाएँ भी जड़ी-बूटियों के संरक्षण संग्रहण तथा

विपणन में लगी है जिसका वर्णन भी आगे इसी लेख में सम्मिलित किया जा रहा है। राज्य में औषधीय पदार्थों का संग्रहण वन प्रबंधन अधिनियम-1982 के तहत किया जाता है। इस अधिनियम के तहत राज्य की 114 जड़ी-बूटियाँ प्रतिबंधित हैं। इसके अलावा भारतीय आयात प्राधिकरण ने 44 पौधों के आयात पर प्रतिबंध लगाया है। राज्य को हर्बलस्टेट घोषित करते हुये जड़ी-बूटी के समग्र विकास हेतु एक औषधि पादपबोर्ड का गठन किया गया है। सुगंध पादप कृषिकरण, प्रसंसकरण एवं विपणन हेतु जड़ी-बूटी शोध एवं संस्थान के अंतर्गत स्वतंत्र इकाई के रूप में सुगंध पादपकेंद्र, सेलाकुई की स्थापना की गई है। जड़ी-बूटी विपणन को सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से ऋषिकेश, टनकपुर एवं रामनगर में जड़ी-बूटी की स्थापना की गई है।

ए; 'कन

औषधीय पौधे, हिमालयी जनपद, पारंपरिक उपयोग, महत्व एवं संरक्षण.

परिचय

आयुर्वेद सबसे प्राचीन एवं उन्नत चिकित्सा शैली है। पाषण युगीन मानव के भोज्य पदार्थों में वन्य कंद-मूल फलों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आज भी पौष्टिकता तथा औषधीय चिकित्सा की दृष्टि से इन वनस्पतियों का बहुत महत्व है। निःसंदेह प्रदेश अपनी विशालता वन-संपदा के लिये विख्यात है। एक स्वस्थ एवं सुखी जीवन जीने के लिये आधुनिक समय में आयुर्वेद को अपना अति आवश्यक है। आयुर्वेद तीन मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है: आहार विहार (खान-पान), दिनचर्या एवं औषध/दवा। इन्हीं तीन आधारों का उपयोग करके रोगी का उपचार किया जाता है। हर्बलिज्म संबंधी सिद्धांत, वनस्पतियों और वनस्पतिसारों के उपयोग पर आधारित एक पारंपरिक औषधीय या लोकदवा का अभ्यास है। हर्बलिज्म को वानस्पतिक दवा, चिकित्सकीय वैधकी, जड़ी-बूटी औषधि, वनस्पति शास्त्र और पादोपचार के रूप में भी जाना जाता है। जड़ी-बूटी/वानस्पतिक दवा में कभी-कभी फफूंदीय, कवकीय तथा मधुमक्खी उत्पादों, साथ ही खनिज, शंख-सीप और कुछ प्राणी अंगों को भी शामिल कर लिया जाता है। प्राकृतिक स्रोतों से व्युत्पन्न दवाओं के अध्ययन को भेषज-अभिज्ञान कहते हैं। दवाओं के पारंपरिक उपयोग को संभावित भावी दवाओं के बारे में सीखने के एक मार्ग के रूप में मान्यता मिली हुई है। 2001 में, कुछ शोधकर्ताओं ने मुख्यधारा की दवा के रूप में उपयोग किये जाने वाले ऐसे 122 यौगिकों की पहचान की जिनकी व्युत्पत्ति "एथनोमेडिकल" (नृजातिय-चिकित्सा) वनस्पति स्रोतों से हुआ था, इन यौगिकों का 80 प्रतिशत उसी या संबंधित तरीके से पारंपरिक नृजातिय-चिकित्सा के रूप में उपयोग होता रहा था। इस शोध पत्र के अंतर्गत बागेश्वर जनपद में मिलने वाली मुख्य औषधीय पौधों का पारंपरिक उपयोग, महत्व एवं संरक्षण को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इस पर्वतीय प्रदेश के लिये अपनी संपदा का सही उपयोग करते हुये उससे समुचित लाभ प्राप्त करने की कई योजनाएँ एवं उनसे संबंधित संस्थाएँ स्थापित किये गये हैं जिनका वर्णन इस शोधपत्र में किया जा रहा है। राज्य में 29 जड़ी-बूटी पौधालयों एवं ऋषिकेश के मुनि की रेती में एक हर्बलगार्डन की स्थापना की गई है तथा 473 पौधालयों में जड़ी-बूटी पौधों का उत्पादन किया गया है। हरिद्वार में जड़ी-बूटी के 300 से अधिक तथा सेलाकुई (देहरादून) में 184 उद्योग स्थापित किये गये हैं।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य जनपद बागेश्वर में मिलने वाली औषधीय पौधों का विवरण, महत्व तथा उनके उपयोग के बारे में अध्ययन करना शोधकर्ताओं की प्राथमिकता है तथा उक्त उद्देश्यों को अग्र शीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

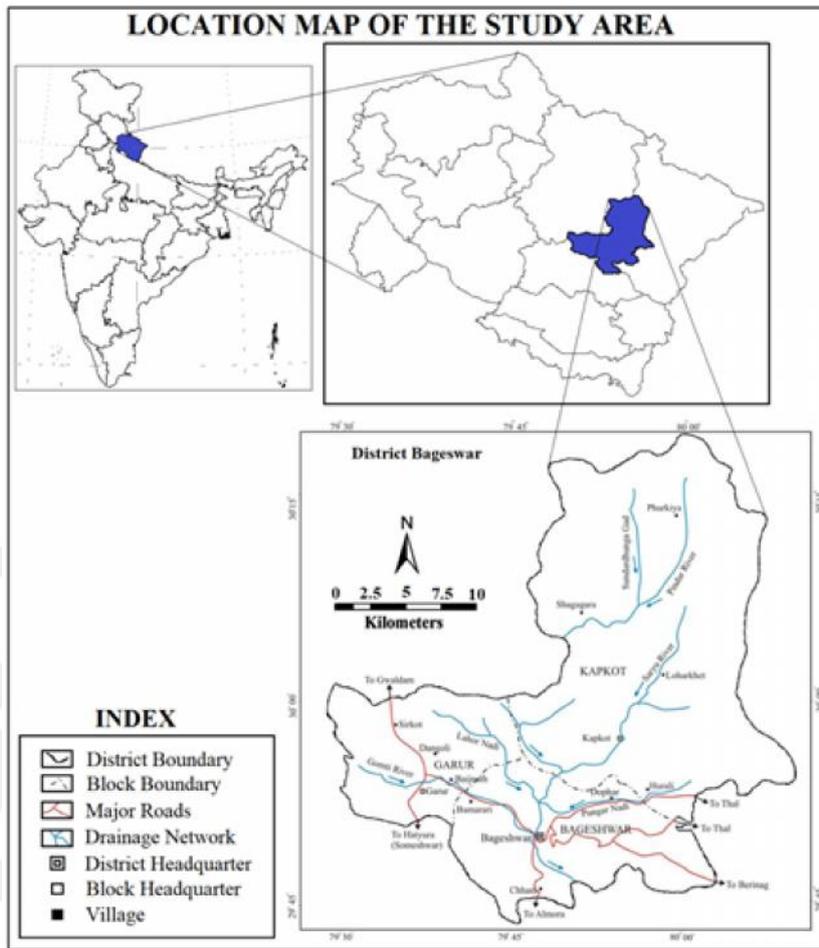
विधितंत्र

इस अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु, शोधकर्ता के द्वारा विश्लेषणात्मक एवं सर्वक्षणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा बागेश्वर जनपद में औषधीय पौधों का पारंपरिक उपयोग, महत्व एवं संरक्षण के अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह

साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है तथा द्वितीयक आँकड़ों को प्राप्त करने के लिये तथा इस शोधकार्य को पूरा करने के लिये पत्रिकायें, विभिन्न पुस्तकों व समाचार पत्रों की सहायता ली गई है। शोधकर्ता ने औषधीय पौधों का पारंपरिक उपयोग, महत्व एवं संरक्षण का अध्ययन: हिमालयी जनपद बागेश्वर (उत्तराखण्ड) के अध्ययन को आधार माना है। गूगल अर्थ, क्वान्टम जी.आई.एस., एम.एस. पेंट, एम.एस. ऑफिस का प्रयोग मानचित्र, आकृति, फोटो तथा भौगोलिक सूचना लेने के लिये किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का स्थिति विस्तार

बागेश्वर भारत के उत्तराखण्ड राज्य का एक जिला है, जिसका मुख्यालय बागेश्वर नगर में स्थित है। इस जिले के उत्तर-पूर्व में पिथौरागढ़, पश्चिम में चमोली तथा दक्षिण में अल्मोड़ा जिला है। बागेश्वर जिले का निर्माण 15 सितम्बर 1997 में अल्मोड़ा के उत्तरी क्षेत्र से की गई थी। इसकी जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 259898 है जिनमें 135772 महिलाएं तथा 124326 पुरुष हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार रुद्रप्रयाग तथा चम्पावत के बाद यह उत्तराखण्ड का तीसरा सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है। इसका अक्षांशीय विस्तार $29^{\circ}54'46.02''N$ से $80^{\circ}9'49.33''N$ तक व देशांतरीय विस्तार $30^{\circ}19'36.88''E$ से $79^{\circ}52'5.35''E$ तक है तथा मानचित्र-1 में अध्ययन क्षेत्र को प्रदर्शित किया गया है। जनपद बागेश्वर में तीन विकासखण्ड— गरुड़, बागेश्वर एवं कपकोट हैं।



मानचित्र-1: जनपद बागेश्वर की अवस्थिति व विस्तार (after D.S. Parihar)

बागेश्वर के हिमालयी क्षेत्रों में औषधीय पौधों का भण्डार एवं महत्व

उत्तराखण्ड राज्य के बागेश्वर जनपद के हिमालयी क्षेत्रों में प्राणदायनी औषधि-पौधों का विपुल भण्डार है। चरक संहिता में इस क्षेत्र को वानस्पतिक बगीचा और हिमालय को हिमवंत औषधि भूमिनाम कहा गया है। राज्य में लगभग 500 प्रकार की जड़ी-बूटियाँ पाई जाती हैं (त्रिपाठी, 2021)। इनमें से कई पौधों को स्थानीय लोग सब्जी,

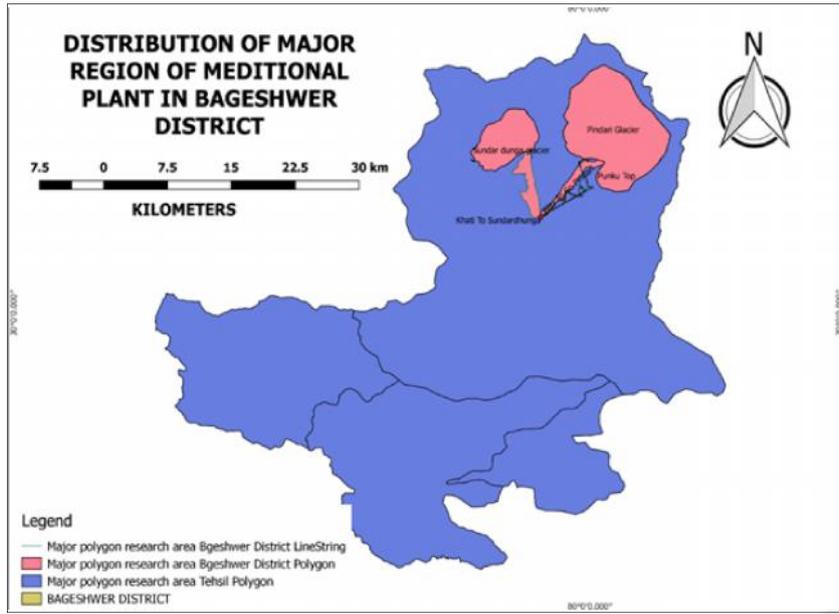
चटनी के रूप में खाने, तेल निकालने, जूस पीने तथा औषधियाँ (किलमोंड़ा को पीलिया में, घोड़चक को अतिसार में, मरोड़ फली को सर्पविष और चिरायता को ज्वर उतारने में) के रूप में प्रयोग करते रहे हैं। ये पौधे राज्य के आय के प्रमुख स्रोत हैं। इनसे अनेकों प्रकार की आयुर्वेदिक, यूनानी, तिब्बती, एलोपैथिक एवं होम्योपैथिक आदि औषधियाँ, सौन्दर्य प्रसाधन, खाद्य पदार्थ तथा रंग आदि बनाये जाते हैं। ये जड़ी-बूटियाँ मुख्य रूप से तीन उद्योगों फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्री, परफ्यूम, कॉस्मेटिक इंडस्ट्री व फूड इंडस्ट्री में प्रयुक्त होती हैं। समस्त उत्तराखण्ड एवं बागेश्वर में मिलने वाले कुछ प्रमुख औषधीय पौधे अधोलिखित हैं:

1. **झूला:** राज्य में 5500 मीटर की ऊँचाई तक झूला वनस्पति की मक्कू, छड़िला आदि कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं। राज्य को इसके व्यापार से बहुत अधिक आय होती है। इसका उपयोग संभर, गरम मसाला, रंग-रोगन, हवन सामग्री बनाने में व रेजिनोइट निकालने में किया जाता है जो सुगंधित चीजों को तैयार करने में प्रयोग किया जाता है। प्रथम ग्रेड का झूला फ्रांस को निर्यात किया जाता है।
2. **ब्राह्मी:** यह एक बहु-वर्षीय शाक है जो कि बुद्धि वर्धक है। हरिद्वार में यह बहुतायत से मिलता है।
3. **धिंधारू:** यह 3600 मीटर की ऊँचाई तक उगता है। इसके फल को खाया जाता है। इस पौधे का सभी भाग हृदय रोग के लिये फायदेमंद है।
4. **शिकाकाई:** यह 2500 मीटर की ऊँचाई तक बहुतायत में पाया जाता है। इसके फलों से आयुर्वेदिक शैम्पू बनाया जाता है।
5. **भिमल:** इस पौधे का सभी भाग उपयोगी है। इसकी कोमल शाखाओं को कूटकर शैम्पू के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
6. **बिच्छू या कण्डाली:** राज्य में बहुतायत में पाई जाने वाली यह औषधीय घास यूरोप मूल की है। इसकी पत्तियों को सब्जी के रूपमें खाया जाता है। बिटामिन तथा खनिज लवणों से युक्त यह पौधा एमिनियारोग का नाशक है।
7. **भैंकल:** 400 मीटर की ऊँचाई तक पाई जाने वाली इस पौधे के बीज से तेल निकाल कर स्थानीय लोग खाने में प्रयोग करते हैं जो गठिया रोग के लिये लाभकारी है।
8. **श्यांवाली (निगुण्डी):** यह वनस्पति राज्य में 1000 मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती है। इस पौधे का हर भाग औषधीय है। इसकी पत्तियाँ गठियाँ और कटे के लिये लाभकारी है तो इसके पुष्पों का उपयोग पेचिश, हैजा, बुखार, यकृत की बीमारियों को ठीक करने में किया जाता है।
9. **किलमोंड़ा:** इसे दारू हरिद्रा या जरिश्क भी कहते हैं, यह एक शीतोष्ण पौधा है। इसकी अर्क, फल, जड़ की छाल, तना व लकड़ी उपयोग में लाई जाती हैं। इसका रसौद आँखों के रोगोपचार के लिये प्रयोग किया जाता है। यह पौधा वन्य-जीव अधिनियम की प्रथम श्रेणी में रखा गया है।
10. **ममीरा (पीलीजड़ी):** इसकी जड़ें पीले रंग की होती हैं जिसको ममीरा गाँठ (पीली जड़ी) के नाम से बाजार में बेचा जाता है। इसकी जड़ों से बना हुआ सुरमा आँख के लिये उपयोगी होता है। जड़ें टॉनिक के रूप में भी प्रयोग की जाती हैं।
11. **अमेश:** इसे हिप्पोपी नाम से भी जाना जाता है। इसमें राज्य के अन्य पौधों की अपेक्षा अधिक मात्रा में कैल्शियम, फास्फोरस और लौह तत्व मिलते हैं। इसका उपयोग दवा से लेकर सौंदर्य प्रसाधन तथा टॉनिक बनाने तक में किया जाता है।
12. **धुनेर:** यह पौधा 2000 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है, जो किटैक्सस प्रजाति का है। अभी हाल में अमेरिका में इस प्रजाति के पौधे से कैंसर के इलाज के लिये टैक्साल नाम का रसायन प्राप्त किया गया है।

हिमालयी जनपद बागेश्वर में प्रयुक्त औषधीय पौधों का विवरण

जनपद के औषधीय पौधों के अध्ययन की सुविधा के लिये खाने तथा बाहरी लेप में प्रयुक्त होने वाले औषधीय पौधों को इन दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है। बागेश्वर जनपद में प्रयुक्त औषधीय पौधों के

विस्तार व उपलब्धता को मानचित्र-2 में दर्शाया गया है, जिनका विवरण निम्नलिखित है:



मानचित्र-2: जनपद बागेश्वर में खाने तथा बाहरी लेप में प्रयुक्त औषधीय पौधों का वितरण (after Surendra Singh)

खाने योग्य औषधीय पौधे

भोजन के रूप में प्रयोग होने वाले औषधीय पौधों को उनके प्राप्ति स्थान, उपयोगी भाग, पौधे का प्रकार तथा पौधे का उपयोग किस रूप में किया जाता है के आधार पर विवरण निम्नलिखित किया गया है:

- निर्विशी:** इस पौधे की प्राप्ति सुंदरदुंगा ग्लेशियर के पाद प्रदेशों से होती है। इसका वनस्पति स्वरूप शाक का है तथा इसके उपयोगी भाग पंचांग है जिसका उपयोग त्रिदोश शामक, पित्तनाशक तथा मूत्रक संबन्धी रोगों के उपचार में लाया जाता है।
- धतूरा:** प्राप्ति स्थान पिण्डारी ग्लेशियर के आस-पास के क्षेत्रों में है। वनस्पति स्वरूप शाक का है तथा इस पौधे का उपयोगी भाग पंचांग है जिसका उपयोग जोड़ों के दर्द तथा वातसम्बन्धी रोगों के इलाज में किया जाता है।
- सिवैय:** यह पौधा मुख्यतः जनपद के 1000-2500 मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता है। इस पौधे का उपयोगी भाग पंचांग और वनस्पति स्वरूप शाक का है। इसका उपयोग प्रायः शीतवीर्य, संकोचक, रक्तस्राव रोधक एवं मूत्रक सम्बन्धी रोगों के इलाज में लाभकारी होता है।
- कालिगामिश्री:** यह पौधा सुंदरदुंगा ग्लेशियर के आस-पास के क्षेत्रों में पाया जाता है तथा इसका उपयोगी भाग पंचांग है जिसका उपयोग मधुमेह रोग एवं बल वर्धक के रूप में किया जाता है।
- टुटगांठ शोम:** शाक के रूप में उपयोग किया जाता है। जनपद के ठंडे जलवायु प्रदेश में पाया जाता है और पंचांग इसका उपयोगी भाग होता है जिसका उपयोग भूख बढ़ाने, ज्वर, मूत्र सम्बन्धी रोगों के इलाज तथा दस्त के इलाज में इस पौधे का उपयोग किया जाता है।
- बालजड़ी/लालजहरी:** इस पौधे का प्राप्ति स्थान पिण्डारी प्रदेश के आस-पास का स्थान है। शाक के तौर पर इसका उपयोग किया जाता है। पंचांग इसका उपयोगी भाग है इसके सेवन से दाँत दर्द कम होता है और केशवृद्धि में भी यह लाभदायक है।
- खुराशनी अजवायन:** इस पौधे पंचांग वाले भाग को शाक के रूप में उपयोग में लाया जाता है। यह मुख्यतः जनपद के सुंदरदुंगा ग्लेशियर के पाद प्रदेश तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका उपयोग नेत्र रोग, कर्णरोग, दंतरोग, अमाशय, कफ, बवासीर तथा मूत्र रोगों के इलाज में किया जाता है।

8. **बसंत:** इस पौधे के पत्र छाल को शाक के रूप में उपयोग में लाया जाता है। यह जनपद में शीत तथा ऊष्ण क्षेत्रों में पाया जाता है, मुख्यतः पिण्डारी क्षेत्र में पाया जाता है। इस पौधे के छाल का उपयोग कृमिनाशक, कर्ण पीड़ा, अतिसार, बिच्छू के काटने, श्वास समस्या, चोट तथा मोच के उपचार में इसका प्रयोग किया जाता है।
9. **बबूना:** इस पौधे के पुष्प, जड़ तथा तेल उपयोगी भाग हैं तथा यह शाकीय पौधा है। पिण्डारी ग्लेशियर और इसके आस-पास के नदी घाटी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका उपयोग प्रायः शूल, छातीदर्द, नेत्र विकार, उदर रोग, पीलिया तथा बिषम ज्वर में इसका उपयोग किया जाता है।
10. **कनेरा:** इस पौधे का पंचांग वाला भाग ही उपयोगी होता है तथा शाक रूप में सेवन करने से यह लाभकारी गुण प्रकट करता है। यह जनपद के नदी घाटी क्षेत्र में पाया जाता है। इसका प्रयोग कुष्ठ रोग, व्रण तथा नेत्र रोगों के उपचार में किया जाता है।
11. **जटामासी:** जटामासी का प्राप्ति स्थल सुंदरदुंगा ग्लेशियर के आस-पास का क्षेत्र है तथा पौधे का स्वरूप शाक है। इसके पंचांग का उपयोग मिर्गी, वायुविकार तथा हृदय रोगों के इलाज में लाभकारी होता है।
12. **मरंजानजोश:** प्राप्ति का स्थल सुंदरदुंगा ग्लेशियर है तथा पौधे का स्वरूप शाक है। इस पौधे का पंचांग वाला भाग ही उपयोगी होता है जिसका उपयोग सूजन, मस्टल-शूल, जुकाम, लकवा के रोग में फूलों को पीसकर लेप करना।
13. **तिपतिया/खट्टी बूटी:** इस पौधे का स्वरूप शाक प्रकार की है जिसकी प्राप्ति स्थल पिण्डारी ग्लेशियर है। इसके पंचांग को उपयोग में लाया जाता है। इसको पीसकर वत, कफ, पित्त आदि रोगों में कल्कवर्ण शोथ पर बाँधने से पीड़ा व सूजन में भी लाभकारी होता है।
14. **तुलसी:** यह ठंडी जलवायु का पौधा है इस पौधे का स्वरूप शाक प्रकार का है। इसके पंचांग का उपयोग पित्त, कफ, वात, श्वास, खाँसी, कुष्ठ तथा कृमिरोगों के उपचार में लाभदायक है।
15. **शालम पंजा:** शालम पंजा पौधे की खास बात यह है कि इसका उपयोगी भाग पंचांग न होकर के जड़ वाला भाग उपयोगी होता है। इस पौधे का प्राप्ति स्थल सुंदरदुंगा ग्लेशियर है, इसका उपयोग पित्त, मधुमेह, धातुरोग में तथा बलवर्धक के रूप में किया जाता है।
16. **लुहरिया:** बागेश्वर जनपद में यह दोनों स्थानों में पाया जाता है। सुंदरदुंगा ग्लेशियर तथा पिण्डारी ग्लेशियर के आस-पास के क्षेत्रों में तथा इस पौधे का स्वरूप शाक का है। इसके जड़ों व पत्तों का क्वाथ बनाकर बिषम ज्वर में, कर्ण शूलमेंस का उपयोग और दस्त के उपचार में किया जाता है।
17. **मैदा:** पौधे का स्वरूप शाक प्रकार का है तथा प्राप्ति स्थल सुंदरदुंगा ग्लेशियर के निचले भाग के नदी घाटी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका उपयोगी भाग मूल है जिसका उपयोग वीर्य जनक, धातुवर्धक, ज्वर, खाँसी, क्षय तथा रक्त विकार में लाभकारी होता है।
18. **महामैदा:** शाक इस पौधे स्वरूप है, सुंदरदुंगा ग्लेशियर व पिण्डारी ग्लेशियर दोनों ही क्षेत्रों में पाया जाता है। तथा इस पौधे का उपयोगी भाग मूल है जिसका उपयोग अष्टवर्ग में किया जाता है।
19. **दाड़िम:** यह सामान्यतः 1300-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगाया जाता है। इसके उगने की आदर्श जलवायुविक दशायें पिण्डारी ग्लेशियर के आस-पास के क्षेत्रों में उपर्युक्त हैं। इसका स्वरूप वृक्ष का है तथा इस वृक्ष के फल, जड़ तथा फल का छिलका कफ, जुकाम तथा खाँसी जैसे रोगों के निवारण में लाभकारी है।
20. **वनककड़ी, घीचरस:** जनपद के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में प्रायः पाया जाता है। इसके जड़ों का उपयोग कैंसर रोग में तथा जड़ नासूर में पीसकर लगाने से लाभ मिलता है।
21. **कुटकी:** सुंदरदुंगा ग्लेशियर तथा आस-पास के क्षेत्रों में उगाई भी जाती है तथा इस क्षेत्र में यह पाया भी जाता है। इसके जड़ों का उपयोग बुखार, पिलिया एवं पेट रोगों में उपचार के लिये किया जाता है।

उरोक्त खाने में प्रयुक्त होने वाले पौधों के अलवा यहाँ पर वन मड़वा, सर्पगंधा, चांदण, डोलूआची, मीठाविष, वत्सनाम, कूठ, अतीस, रतनजोती, सिलफोड़ा, डायोस्कोरिया, पत्थरलौंग, काकोली, गूंगुधूप, लहसुनिया, गंजारू, चिरायता, ममीरा आदि पौधे यहाँ पर पाये जाते हैं।

बाहरी लेप में प्रयुक्त औषधीय पौधे

इसमें प्रयुक्त होने वाले औषधीय पौधों का नाम, प्राप्ति क्षेत्र, पौधे का स्वरूप, पौधे का उपयोगी भाग तथा इस औषधीय पौधे का उपयोग किन-किन रोगों के उपचार में किया जाता है। इसका विवरण अधोलिखित तालिका-1 में किया गया है:

तालिका 1: बागेश्वर जनपद में उपस्थित सभी बहरी लेप में प्रयुक्त होने वाले औषधीय पौधों का विवरण (स्रोत: उत्तराखण्ड समय ज्ञान कोष)।

स्थानीय नाम	प्राप्ति क्षेत्र	वनस्पति का स्वरूप	उपयोगी भाग	उपयोगिता
बसंत	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	पत्र छाल	पत्ते कृमिनाशक, कर्णपीड़ा, अतिसार, अंश तथा बिच्छू के काँटे, श्वास में, चोट, मोच में लेप।
कनेरा	नदी/घाटी	शाक	पंचांग	कुष्ठ, व्रण तथा नेत्र रोगों में।
मरंजान जोश	सुंदरदुंगा ग्लेशियर	शाक	पंचांग	सूजन, मस्टक-शूल, जुकाम, लकवा के रोग में, फूलों को पिसकर लेप करना आधा शीशी में।
तिपतिया/खट्टी बूटी	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	पंचांग	वत, कफ, पित्त आदि रोगों में, इसका कल्क व्रण शोथ पर बाँधने से पीड़ा व सूजनमें।
जम्बूफ्रान	सुंदरदुंगा ग्लेशियर	शाक	फूल/पत्ति	चूर्ण के साथ सूजन में सेक करने हेतु।
पत्तिकुंज यानागदौन	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	फूल/पत्ति	पत्तों का रस घावों को ठीक करने में।
जंगली पांगर, बनखोर	पिण्डारी ग्लेशियर	वृक्ष	फल/पत्तियाँ	गठिया एवं बवासीर के उपचार में।
बेल	नदी-घाटी क्षेत्र	वृक्ष	फल/पत्तियाँ	आँत्र शोथपित्त, कफ, ज्वर, अतिसार, सूजाक में।
ढाकपलास	नदी-घाटी	वृक्ष	पत्तियाँ/फल/जड़	आँख, चर्मरोग, हाथी पाँव में।
कस्तुरी कमल	सुंदरदुंगा ग्लेशियर	शाक	पंचांग	पत्तियों का रस, जले-कटे, फोड़ोंमें।
धतूरा	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	पंचांग	जोड़ों के रोग, वातरोगमें।
पीपल	नदी-घाटी	वृक्ष	छाल/फल	व्रण, पित्त, कफ, रक्तविकार एवं जूँ लीख नाशक।
गूलर	नदी-घाटी	वृक्ष	छाल/कच्चेफल	चर्मरोग, गोनो रियामें।
आँवला	नदी-घाटी	वृक्ष	फल/छाल/मूल	कफ, वात, बल वर्धक, केशों की वृद्धि में।
बाल/लालजड़ी	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	पंचांग	दाँत दर्द तथा केशवृद्धि में।
आईभी	पिण्डारी ग्लेशियर	लता	पंचांग	पत्ते पुटलिस, अल्सर, फोड़े आदि में फलों का प्रयोग।

च्यूरा	नदी-घाटी	वृक्ष	फल	दर्द, गठिया आदि रोगों में।
नागकेशर	नदी-घाटी	वृक्ष	फूल/पत्र / बीज	ज्वर, तृषा, वमन, मितली, कुष्ठ, सिर के रोगों में, बीज का तेल मालिश के काम।
काफल	पिण्डारी ग्लेशियर	वृक्ष	फल/छाल	ज्वर, सिरदर्द, शरीर, पीड़ा, कफ, अतिसार, खाँसी जैसे रोगों में, छाल का चूर्ण मालिश के काम।
बबूना	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	पुष्प/जड़ / तेल	शूल, छातीदर्द, नेत्र विकार, उदर शूल, पीलिया, विषम ज्वर में।
मरंजान जोश	सुंदरदुंगा ग्लेशियर	शाक	पंचांग	सूजन, मस्तक-शूल, जुकाम, लकवा के रोग में, फूलों को पीसकर लेप करना आधा शीशी में।
तिपतिया/ खट्टी बूटी	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	पंचांग	वत, कफ, पित्त आदि रोगों में, इसका कल्क व्रण शोथ पर बाँधने से पीड़ा व सूजन में।
वनककड़ी, घीचरस	सुंदरदुंगा ग्लेशियर	शाक	जड़	कैंसर रोग में, जड़ नासूर में पीसकर लगाने से लाभ।
विजयसार	गरुड़	वृक्ष	त्वचा, सार एवं गोंद	अतिसार, मुखपाक, पित्त, फोड़े, सुजाक, दंत शूल, प्रमेहादी रोगों में, मधुमेह में लाभकारी।
चीड़	पिण्डारी ग्लेशियर	वृक्ष	विरोजा/ तारपीन	कफ, वात, शोथ, काण्डू एवं व्रणनाशक, तेल कृमि, कुष्ठ एवं वायुनाशक।
भंजिष्ठ, मंजित	पिण्डारी ग्लेशियर	लता	पंचांग	नेत्ररोग, कर्णरोग, कुष्ठ, रूधीर विकार, कफ, सूजन, व्रण और प्रमेह का नष्ट करने वाला।
बुराँश	पिण्डारी ग्लेशियर	वृक्ष	फूल/पत्ते	पुष्पों को पीसकर सिर दर्द में लेप व उच्चरक्त चाप में शीतक।
रीठा	नदी-घाटी	वृक्ष	फूल/गूदा, बीज, छिलका	वात, कफ, कुष्ठ रोगों में उपयोगी।
लोध	पिण्डारी ग्लेशियर	वृक्ष	छाल	त्वचा के रोग, कुष्ठ, रक्त स्राव, कफ तथा केशों की सफाई में।
मीठा विष, वत्सनाम	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	कंद	कोड़, जोड़ों के दर्द में।
रतनज्योति	पिण्डारी ग्लेशियर	शाक	बीज/जड़	बीज व मन में, जड़ें दूध के साथ पेचिश में, ज्वर, फोड़ों में।
गुंगुल धूप	सुंदरदुंगा ग्लेशियर	शाक	जड़	फोड़े-फुंसियों पर, जड़ का काढ़ा, उदर शूल में।

जनपद बागेश्वर में औषधि के रूप में प्रयुक्त औषधीय पौधों का महत्व

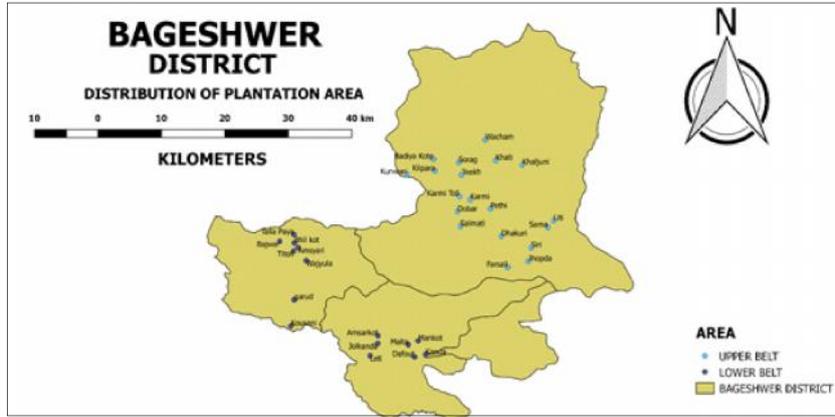
पुराने समय में बीमारियों के उपचार के का एक मात्र साधन पौधे ही थे। इन पौधों को प्राकृतिक रूप में, अर्क या चूर्ण के रूप में पीसकर प्रयोग किया जाता था। लेकिन अब आज के समय में औषधीय पौधों पर खोज कर के अब इनके क्रियाशील तत्वों को पहचान और निकालकर प्रयोग किया जाने लगा है। पौधों के अलावा जीव-जन्तु तथा अकार्बनिक पदार्थों को प्रयोग में लाकर शीघ्र असरदार ऐलोपैथी औषधि का जन्म हुआ और आज के समय में यही चल रही है। ऐलोपैथिक दवाइयाँ जहाँ एक ओर तीव्र असरदार होती हैं वहीं दूसरी ओर इनके घातक प्रभाव भी दिखाई देते हैं। कुछ समय पहले ऐलोपैथिक दवाइयाँ अमीर तथा शिक्षित लोगों की प्राथमिकता हुआ करती थी। दवाइयाँ महंगी होने के कारण आम व्यक्ति इसे खरीद नहीं पाता था और मजबूरी में उसे आयुर्वेदिक दवाइयों पर ही निर्भर रहना पड़ता था। जैसे-जैसे इन दवाइयों का प्रभाव मनुष्यों पर पड़ा और बाद में यह पता चला कि

ऐलोपैथिक दवाईयाँ शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं तो फिर बाद में इन ऐलोपैथिक दवाइयों का उपयोग करने वाले व्यक्तियों ने आयुर्वेद अर्थात् औषधीय दवाईयों को अपनाना प्रारम्भ कर दिया।

जनपद में औषधीय पौधों का उपयोग भोजन, औषधि, जड़ी-बूटियाँ, स्वाद, रंजक आदि में किया जाता है। किसी भी पौधे का औषधीय महत्व उसमें पाये जाने वाले कुछ विशेष पदार्थ— ऐल्केलाइड, वाष्पशील तेल आदि के कारण होता है। औषधीय पौधों का उपयोग अनेक रोगों को ठीक करने में किया जाता है, जैसे— मिर्गी, पागलपन, मंदबुद्धि, वात, गठियावात, पेट दर्द, मलेरिया, त्वचा रोग आदि में भी लाभकारी है।

जनपद बागेश्वर में प्रयुक्त औषधीय पौधों की वर्तमान व्यवसायिक स्थिति

जनपद में औषधीय पौधे जिनका व्यवसायिक रूप में उत्पादन किया जा रहा है मुख्यतः 6000 फिट की ऊँचाई पर पाई जा रही हैं। उत्पादन की दृष्टि से तथा स्थानीय जानकारी के आधार पर जनपद बागेश्वर को दो भागों में बाँटा गया है— ऊपरी बेल्ट तथा निचला बेल्ट (मानचित्र-3)। ऊपरी बेल्ट के क्षेत्रों में— खलजूनी, बदियाकोट, किलपारा, डौला, खाती, कर्मीतौली, कर्मी, सापुली, दोबाढ़, तिलाड़ी, सलमाटी, तोली, शामा, सूपी आदि में औषधीय पौधों का कृषिकरण किया जा रहा है। इन क्षेत्रों में मुख्यतः रीठा, कुटकी, कूट, वनहल्दी (कपूर कजरी), तेजपत्ता आदि की कृषि की जा रही है।



मानचित्र 3: जनपद बागेश्वर में प्रयुक्त औषधीय पौधों की वर्तमान व्यवसायिक स्थिति (after Surendra Singh)

निचले बेल्ट के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में माल्ता, दफौट, कांडा, जौलकाण्डे आदि क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है। इस बेल्ट में प्रधानतः बड़ी इलायची तथा तेजपत्ते का उत्पादन किया जा रहा है। तालिका-1 के अनुसार, वर्ष 2021-22 के अंतर्गत जनपद में कुल औषधीय पौधों का उत्पादन 540 क्विंटल है जिसमें कुटकी, कूट, कचनार, वनहल्दी, रीठा आदि को सम्मिलित किया गया है। इनमें से रीठा का उत्पादन सर्वाधिक रहा लगभग 75 हजार क्विंटल, तथा इनसे सम्पूर्ण आय वर्ष 2021-22 में 32 लाख रुपये हुई है (जिला भेषज सहकारी संघ लि., बागेश्वर, उत्तराखण्ड) और कृषिगत किसान धनराशि से लाभान्वित हुये हैं।

तालिका 2: नाप भूमि से उत्पादित जड़ी-बूटियों का प्रजातिवार विवरण वर्ष 2021-22 (स्रोत— जिला भेषज सहकारी संघ लि., बागेश्वर, उत्तराखण्ड)।

क्र.स.	प्रजाति का नाम	माह की प्रगति				क्रमिक प्रगति			
		मात्रा (कु0 में)	अनुमानित मूल्य (लाख रू0 में)	कृषित प्रजाति का क्षेत्रफल (नाली में)	निर्गत रवन्नों की संख्या	मात्रा (कु0 में)	टनुमानित मूल्य (लाख रू0 में)	कृषित प्रजाति का क्षेत्रफल (नाली में)	निर्गत रवन्नों की संख्या
1.	तेजपात	88	4.4	60	6	93	4.65	70	8
2.	रीठा	8	0.4	10	1	94	3.98	71	5
3.	कुटकी	0.7	0.56	8	1	0.7	0.56	8	1
4.	तुलसी	0	0	0	0	1	0.25	5	1
5.	वच	0	0	0	0	1	0.25	5	1
योग		96.7	5.36	78	8	189.7	9.69	159	16

नोट: जनपद में पिछले 2-3 वर्षों से ही औषधीय एवं सुगंधित पौधों का उत्पादन एवं संरक्षण सम्बंधी चिन्ताओं पर जोर दिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बागेश्वर में प्रयुक्त औषधीय पौधों की वर्तमान स्थिति में औषधीय

पौधों के उत्पादन से सम्बन्धित आँकड़ों को जिला भेषज सहकारी संघ लिमिटेड बागेश्वर संस्थान से मुलाकाती साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त किये गये हैं।

जनपद बागेश्वर में औषधीय पौधों की लोकप्रियता

जनपद में औषधीय पौधों की विभिन्न प्रजातियों के पौधों ने यहाँ पर लोकप्रियता को बढ़ावा दिया है एवं औषधीय एवं सुगन्धित पौधों के कृषिकरण को प्रदेश में बढ़ावा देने के लिये उत्तराखण्ड सरकार द्वारा नई नीतियाँ प्रतिपादित की हैं साथ ही जड़ी-बूटी उत्पादन से जुड़े कृषकों का पंजीकरण, उत्पाद के निकासी नियमों का सरलीकरण, जड़ी-बूटी मण्डियों में विपणन आदि की व्यवस्था, काश्तकारों एवं उद्योगों के हितों को ध्यान में रखते हुये की गई है। इसके अलावा राज्य सरकार ने प्रदेश में वृहद स्तर पर कृषिकरण हेतु 26 महत्वपूर्ण प्रजातियों को चयनित किया है तथा इनके कृषिकरण पर कुल लागत का 50 प्रतिशत अनुदान देने का निश्चय किया है। इनका संक्षिप्त विवरण नीचे तालिका-3 में दिया गया है जिससे किसानों को निश्चय ही लाभ होगा। इनसे यहाँ के लोगों के जीविका के स्रोत के रूप में तथा उपचार में अहम भूमिका निभाई है। इस क्षेत्र में मुख्यतः निम्नलिखित पौधों की लोकप्रियता है जिसे यहाँ के स्थानीय लोग कृषिकरण द्वारा इन औषधीय पौधों का उत्पादन करते हैं।

तालिका 3: बागेश्वर में लोकप्रियता के आधार पर औषधीय पौधों की विभिन्न प्रजातियों के नाम व वानस्पतिक नाम (स्रोत- जड़ी-बूटी शोध एवं विकास संस्थान, गोपेश्वर, चमोली)।

क्र.स0	नाम	वानस्पतिक नाम	क्र.स0	नाम	वानस्पतिक नाम
1	अतीस	Aconitum heterophyllum	14	बड़ीइलायची	Amomum subulatum
2	कुटकी	Picrorhizakurrooa	15	पत्थरचूर	Coleus barbatus
3	कूठ	Saussureacodtus	16	रोजमेरी	Rosmarinus officinalis
4	जटामासी	Nardostachysjatamansi	17	जेरेनियम	Pilargonium graveolens
5	चिरायता	Swertia chirayita	18	सर्पगंधा	Rauwolfia serpentina
6	वनककड़ी	Podophyllum hexandrum	19	कलिहारी	Gloriosa superva
7	फरण	Allium stracheryi	20	शतावर	Asparagus racemosus
8	कालाजीरा	Carum carvi/ Buniumpercicum	21	लेमनग्रास	Cymbopogon flexuosus
9	पाइरेथ्रम	Chrysanthemum cinerariaefolium	22	कैमोमाईल	Matricaria chamomilla
10	तगर	Valerianajatamansi/ V.officinali	23	सिलिबम	Silybum marianum
11	मंजीठ	Rubia cordifolia	24	स्टीविया	Stevia rebuadiana
12	अमीमेजस	Ammi majus	25	पिपली	Piper longum
13	तिलपुष्पी	Digitalis lanata	26	ब्राह्मी	Centella asiatica/ Bacopa monnieri

औषधीय रूप में प्रयोग किये जाने की भूमिका

औषधीय पौधों का मानव जीवन में सदैव से ही रहा है। भारत के प्राचीन इतिहास में इन औषधीय पौधों के उपयोग की कई प्रणालियाँ प्रचलित रही हैं। देश की आबादी का लगभग 60-80 प्रतिशत भाग आज भी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से औषधीय पौधों पर निर्भर हैं। यही कारण है कि आज हमें अपने देश में उपलब्ध औषधीय पौधों का संरक्षण करने एवं उन्हें वैज्ञानिक तरीके से बढ़ाने की आवश्यकता है। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय औषधीय पौधों के संरक्षण तथा उनके उपयोग, विपणन, कृषि इत्यादि के उत्थान के लिये सदैव ही प्रयत्नशील रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये वर्ष 1994 में एक पाइलट प्रोजेक्ट के रूप में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिये एक योजना

प्रारंभ की गई। वर्ष 1994 में यूनाइटेड नेशन डेवलपमेंट प्रोग्राम—यूएनडीपी के सहयोग से क्लाइमेट चेंज फंड—सीसीएफ परियोजना के तहत वर्ष 2003 में नौ राज्यों में औषधीय पौधों के संरक्षण हेतु परियोजनायें प्रारंभ की गई (सुरेन्द्र कुमार, निदेशक, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय)।

हर्बलिज्म अर्थात् जड़ी-बूटी संबंधी सिद्धांत, वनस्पतियों और वनस्पति सारों के उपयोग पर आधारित एक पारंपरिक औषधीय या लोकदवा का अभ्यास है। हर्बलिज्म को वनस्पतिक दवा, चिकित्सकीय वैद्य की, जड़ी-बूटी औषध, वनस्पति शास्त्र और पादपोपचार के रूप में भी जाना जाता है। दवाओं के पारंपरिक उपयोग को संभावित भावी दवाओं के बारे में सीखने के मार्ग के रूप में मान्यता मिली हुई है। 2001 में, शोधकर्ताओं ने मुख्य धारा की दवा के रूप में उपयोग किये जाने वाले ऐसे 122 यौगिकों की पहचान की जिनकी व्युत्पत्ति "एथनोमेडिकल" ; नृजाति-चिकित्सा वनस्पति स्रोतों से हुआ था। इन यौगिकों का 80 प्रतिशत उसी या संबंधित तरीके से पारंपरिक नृजाति-चिकित्सा के रूप में उपयोग होता रहा था।

औषधीय पौधों का व्यवसायिक महत्व

जनपद में पाये जाने वाले औषधीय पौधे जिनका उत्पादन स्थानीय लोगों के द्वारा किया जाता है, इनका विवरण निम्न प्रकार है:

A. कूठ

1. भूमि- बलुई-दोमट जिसमें कार्बनिक तत्वों की अधिकता हो।
2. जलवायु- ठंडी एवं आर्द्र टैम्परेट से अल्पाइन क्षेत्र।
3. ऊँचाई- 2000-3000 मीटर।
4. प्रवर्धन- बीज व जड़ों की कटिंग द्वारा।
5. अंकुरण अवधि- 10-15 दिन।
6. रोपण सामग्री/नाली- 75 ग्राम बीज।
7. बुवाई समय- अप्रैल-मई (लाइन में)।
8. रोपण समय- जुलाई।
9. दूरी- 60 सेमी x 60सेमी।
10. पौध संख्या/नाली- 550 पौधे।
11. फसल अवधि- रोपण के दो वर्ष 3 माह पश्चात्।
12. फसल कटाई- अक्टूबर।
13. कटाई पश्चात् तकनीक- जड़ों को धोकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटने के पश्चात् धूप में सुखाकर धुआँ दें। ग्रेड करने के पश्चात् बोरों में भण्डारित करें।
14. औसत उत्पादन/नाली- 70 किग्रा. सूखी जड़ें (127 ग्राम/पौध)।
15. पौध बाजार दर- 50-75 रूपया/किग्रा (सूखी जड़े)।
16. औषधि उपयोग- कुष्ठ/त्वचा रोग, खँसी एवं पाचन विकारों में।

B. कुटकी

1. भूमि- बलुई-दोमट उपयुक्त होती है।
2. जलवायु- नम टैम्परेट से अल्पाइन क्षेत्र, आंशिक छाँव उत्तम।
3. ऊँचाई- 2200-3500 मीटर।
4. प्रवर्धन- बीज तथा स्टोलन कटिंग द्वारा।
5. अंकुरण अवधि- 25-30 दिन।
6. रोपण सामग्री/नाली- 5 ग्राम बीज।
7. बुआई समय- मार्च-अप्रैल (लाइन में), पौली हाउस में ज्यादा उचित।

8. कायिक प्रवर्धन— अप्रैल—मई माह में स्टोलन कटिंग का नर्सरी में रोपण करते हैं जो जुलाई में खेत में प्रत्यारोपण हेतु तैयार हो जाते हैं। यह विधि उत्तम तथा अधिक उत्पादन देती है।
9. रोपण समय— जुलाई—अगस्त (बीज से उत्पादित पौधों का रोपण अगले वर्ष जुलाई में)।
10. दूरी— 30सेमी0 X 30सेमी0।
11. पौध संख्या / नाली— 2200 पौधे।
12. फसल अवधि— रोपण के 2 वर्ष 3 माह पश्चात्।
13. फसल कटाई— अक्टूबर।
14. कटाई पश्चात् तकनीक— जड़ों को साधारण कमरे की गर्मी में सूखा कर धूल, मिट्टी साफ करके बोरो में भरकर भंडारित करें।
15. औसत उत्पादन / नाली— 20 किग्रा. सूखी जड़ें / स्टोलन (9 ग्राम / पौध)।
16. बाजार दर—150—200 रूपया / किग्रा (सूखी जड़ / स्टोलन)।

C. लेमनग्रास

1. भूमि— बलुई—दोमट तथा बंजर भूमि।
2. जलवायु— आर्द्र तथा गर्म सब—ट्रोपिकल क्षेत्र।
3. ऊँचाई— 350—1500 मीटर।
4. प्रवर्धन— स्लीप द्वारा।
5. रोपण सामग्री / नाली— 550 स्लीप।
6. रोपण समय—जुलाई या फरवरी—मार्च (सिंचित भूमि में)।
7. दूरी— 60 से.मी. X 60 से.मी.।
8. पौध संख्या / नाली— 550 स्लीप।
9. फसल अवधि— 5 वर्ष।
10. फसल कटाई— अक्टूबर, फरवरी, मई एवं अगस्त।
11. कटाई पश्चात् तकनीक— कटाई के पश्चात् पत्तियों को धूप में रखें (अधिकतम 3—4 दिन) तथा अच्छे उत्पादन के लिये आसवन से पूर्व पत्तियों को छोटे—छोटे टुकड़ों में काटना चाहिये। कटाई के पश्चात् पत्तियों को वर्षा से बचायें।
12. औसत उत्पादन / नाली— 4 कि.ग्रा. तेल / वर्ष।
13. बाजार दर— 300—325 रूपया / कि.ग्रा. (तेल)।
14. औषधीय उपयोग— इत्र, सौन्दर्य प्रसाधन, साबुन व बिटामिन—ए बनाने में।

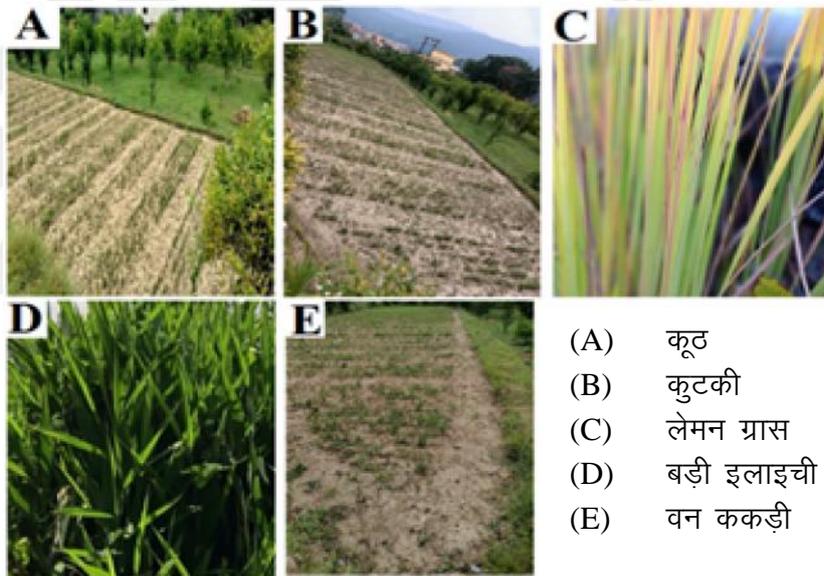
D. बड़ी इलाइची

1. भूमि— नम दोमट।
2. जलवायु— नम एवं छाँवदार बॉज तथा उतीस के वन क्षेत्र।
3. ऊँचाई— जोंगु गोल से (900—1100 मीटर), सावने (1100—1500 मी0) तथा वारलान्गे (1500—2000 मी0)।
4. प्रवर्धन— बीज तथा सकर द्वारा।
5. रोपणसामग्री / नाली— 25 ग्राम बीज।
6. बुआईसमय— अक्टूबर—नवम्बर (लाइन में)।
7. अंकुरण समय— मार्च।
8. प्रत्यारोपण समय— जुलाई।
9. रोपण समय— अगले वर्ष जुलाई में।
10. दूरी— 1.5 मीटर X 1.5 मीटर।
11. पौध संख्या / नाली— 80 पौधे।

12. फसल अवधि— 10 वर्ष।
13. फसल कटाई— अक्टूबर—नवम्बर।
14. कटाई पश्चात् तकनीक— पके हुये फलों को तोड़कर छाँव में सुखा लें या मशीन में सुखाकर भंडारित करें। इस प्रजाति के कृषिकरण हेतु 40—50 प्रतिशत छाँव आवश्यक है।
15. औसत अत्पादन/नाली— 3 वर्ष पश्चात् 10 कि.ग्रा. सूखेफल (125 ग्राम/पौधे) प्रतिवर्ष।
16. बाजार दर— 150—200 रूपया/कि.ग्रा. (सूखे फल)।
17. औषधि उपयोग— पाचकम शाला, औषधीय एवं सुगंधीय उद्योगों में।

E. वनककड़ी

1. भूमि— काली बलूई—दोमट जिसमें ह्यूमस की अधिकता हो।
2. जलवायु— नम, टैम्परेट से अल्पाइन क्षेत्र।
3. ऊँचाई— 2200—3500 मीटर।
4. प्रवर्धन—बीज एवं राइजोम कटिंग द्वारा।
5. अंकुरण अवधि— 30—45 दिन।
6. रोपण सामग्री/नाली— 150 ग्राम बीज या 2 किलो राइजोम कटिंग।
7. बुआई समय— मार्च—अप्रैल (पंक्ति में)।
8. रोपण समय— अगले वर्ष जुलाई में।
9. दूरी— 30 से.मी. X 30 से.मी।
10. पौध संख्या/नाली— 2200 पौधे।
11. फसल अवधि— रोपण के 2 वर्ष 3 माह पश्चात्।
12. फसल कटाई— सितम्बर—अक्टूबर
13. कटाई पश्चात् तकनीक— अच्छी तरह धोकर आंशिक धूप में सुखायें तथा बोरों में भंडारित करें। बाजार दर कम होने के कारण इस प्रजाति का कृषिकरण आर्थिक दृष्टि से वर्तमान में लाभकारी नहीं है लेकिन इस प्रजाति का वर्तमान में बचाव एवं संरक्षण जरूरी है। राइजोम के कटिंग द्वारा कृषिकरण करने पर बेहतर उत्पादन प्राप्त होता है।
14. औषध उत्पादन/नाली— 8.8 कि.ग्रा. सूखे राइजोम/जड़े (4 ग्राम/पौधे)।
15. बाजार दर—100—150 रूपया/कि.ग्रा. (सूखे राइजोम/जड़ें)।
16. औषधीय उपयोग—कैंसर व उदर रोग में।



- (A) कूठ
(B) कुटकी
(C) लेमन ग्रास
(D) बड़ी इलाइची
(E) वन ककड़ी

औषधीय पौधों के संरक्षण हेतु सुझाव

उत्तराखण्ड के आर्थिक विकास में औषधीय एवं सुगन्धित पौधों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्वतीय राज्य आदिकाल से ही औषधीय एवं सुगन्धित पौधों में प्राकृतिक रूप से समृद्ध रहा है। अतः नवोदित राज्य में जड़ी-बूटियों की व्यवसायिक कृषिकरण की अपार संभावनाओं को देखते हुये राज्य सरकार ने प्रदेश को "हर्बलस्टेट" घोषित किया है। जपनद में प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में पाई जाने वाली महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों के अत्यधिक विदोहन से उनका अस्तित्व खतरे में हैं। पौधों की उत्तम वृद्धि एवं अधिकतम उत्पादन के लिये फसल को बर्फ गिरने से पूर्व जंगली घास व पत्तियों से ढक देना चाहिये। अतः कह सकते हैं कि इन प्रजातियों के विलुप्त होने से पहले इनके संरक्षण के लिये इन पौधों का कृषिकरण किया जाय और इनको विलुप्त होने से बचाया जाय।

औषधीय एवं सुगन्धित पौधों के कृषिकरण की वर्तमान आवश्यकता

बागेश्वर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण जैवविविधता के साथ-साथ औषधीय एवं सुगन्धित पौधों में पूर्व से ही अत्यधिक सम्पन्न रहा है। विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की उपलब्धता अधिक से अधिक आर्थिक महत्व के जड़ी-बूटी प्रजातियों को प्राकृतिक आधार प्रदान करती है। वर्तमान परिपेक्ष्य में इन प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक विदोहन के कारण इनको कृषिकरण द्वारा संरक्षित किया जाना अत्यंत आवश्यक हो गया है जो कि प्रदेश के आर्थिक आधार को सबल बनाने के लिये भी एक सतत् प्रक्रिया है। वर्तमान में औषधीय एवं सुगन्धित पौधों के कृषिकरण का ज्ञान कृषकों में पारम्परिक खेती के सापेक्ष अति सूक्ष्म है। अतः प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में इसके विकास के लिये नयी नीतियों का सूत्रधार किया गया है तथा जटिल नीतियों का सरलीकरण किया है। वर्तमान में आर्थिक सम्पन्नता, रोजगार आधार, मूल्यवर्धक प्रक्रिया एवं अलाभकारी पारम्परिक कृषि को उपयोगी बनाने के लिये औषधीय एवं सुगन्धित पौधों पर आधारित नयी नीतियों, विपणन व्यवस्थाओं तथा इनके वैज्ञानिक कृषि-तकनीक की उपलब्धता हेतु जनजागरण की आवश्यकता है। उक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर जड़ी-बूटी शोध एवं विकास संस्थान द्वारा 26 महत्वपूर्ण औषधीय एवं सुगन्धित पौधों की प्रजातियों को चयनित किया है जिनका विवेचन उपरोक्त तालिका-3 में किया गया है।

औषधीय पौधों के संरक्षण की आवश्यकता

पिछले 4-5 सालों से इन पौधों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये जिले में जिला भेषज सहकारी संघ की स्थापना की गई है। यह निरन्तर जिले में औषधीय एवं सुगन्धित पौधों के संरक्षण एवं नई तकनीक के माध्यम से जिले में पौधों से जुड़े किसानों को जागरूक कर रहा है। 1972 से जड़ी-बूटियों के संग्रहण का कार्य सहकारिता विभाग के जड़ी-बूटी विकास योजना के तहत शुरू किया गया। 1980 से जड़ी-बूटियों के संरक्षण के लिये राज्य में जिलेवार भेषज सहकारी संघों की स्थापना की गई। वर्तमान में भेषज सहकारी संघों के अलावा कुछ अन्य संस्थायें भी जड़ी-बूटियों के संरक्षण, संग्रहण तथा विपणन में लगी हैं (तालिका-4 एवं तालिका-5), वे अधोलिखित हैं:

तालिका 4: वर्तमान में प्रमुख संस्थायें जो जड़ी-बूटियों के संरक्षण, संग्रहण तथा विपणन में कार्यरत हैं (स्रोत-त्रिपाठी, 2019)।

क्र.सं0	संस्थान	स्थान
1	इण्डियन ड्रग्स एण्ड फार्मास्यूटिकल लि.	ऋषिकेश (देहरादून)
2	इण्डियन मेडिसिन फार्मास्यूटिकल्स लि.	मोहान (अल्मोड़ा)
3	इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद फार ड्रग्स रिसर्च	ताड़ीखेत (अल्मोड़ा)
4	कोऑपरेटिव ड्रग सफैक्टरी	रानीखेत (अल्मोड़ा)
5	कुमाऊँ मण्डल विकास निगम	नैनीताल
6	गढ़वाल मण्डल विकास निगम	पौड़ी गढ़वाल

तालिका 5: जड़ी-बूटी और औषधीय क्षेत्र में शोध एवं विकास से सम्बंधित राज्य में प्रमुख संस्थाएँ (स्रोत-त्रिपाठी, 2019)।

क्र.सं.	संस्थान	स्थान
1	उच्चस्थलीय पौध शोध संस्थान	श्रीनगर (पौड़ी गढ़वाल)
2	जड़ी-बूटी शोध एवं विकास संस्थान	गोपेश्वर (चमोली)
3	औषधीय एवं सुगंधित पौध संस्थान (सीमैप)	पंतनगर
4	रासायन विभाग एवं वानस्पतिक विभाग (कुमाँऊ विश्वविद्यालय)	नैनीताल
5	रसायन विभाग एवं वनस्पति विभाग (गढ़वाल विश्वविद्यालय)	श्रीनगर
6	वन अनुसंधान संस्थान	देहरादून
7	जी. बी. पंत हिमालय पर्यावरणीय एवं विकास संस्थान	कटारमल (कोसी)

जनपद में औषधीय पदार्थों का संग्रहण वन प्रबंधन अधिनियम 1982 के तहत किया जाता है, इस अधिनियम के तहत राज्य की 114 जड़ी-बूटियाँ प्रतिबंधित हैं। इसके अलावा भारतीय आयात प्राधिकरण ने 44 पौधों के आयात पर प्रतिबंध लगाया है, जैसे: कुटकी, जटामासी, अजीस, वनककड़ी आदि औषधीय प्रजाति के पौधे।

औषधीय पौधों को अधिक चिकित्सकीय प्रयोग किये जाना

कुदरत के दिये गये वरदानों में पेड़-पौधों का महत्वपूर्ण स्थान है। पेड़-पौधे मानवीय जीवन चक्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसमें न केवल भोजन सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति ही होती है बल्कि जीव जगत से नाजुक संतुलन बनाने में भी ये आगे रहते हैं। इनकी उपयोगिता को देखते हुये इनको अनेक संवर्गों में बांटा गया है। इनमें औषधीय पौधे न केवल अपना औषधीय महत्व रखते हैं आय का भी एक जरिया बन जाते हैं। हमारे शरीर को निरोगी बनाये रखने में औषधीय पौधों का अत्यधिक महत्व होता है, यही वजह है कि भारतीय पुराणों, उपनिषदों, रामायण एवं महाभारत जैसे प्रमाणिक ग्रन्थों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। इससे प्राप्त होने वाली जड़ी-बूटियों माध्यम से न केवल हनुमान ने भगवान लक्ष्मण की जान बचाई बल्कि आज की तारीख में भी चिकित्सकों द्वारा मानव रोगोपचार हेतु अमल में लाया जाता है। यही नहीं, जंगलों में स्वतः ही उगने वाली अधिकांश औषधीय पौधों के अद्भुत गुणों के कारण लोगों द्वारा इसकी पूजा-अर्चना तक की जाने लगी है जैसे: तुलसी, पीपल, ओक, बरगद तथा नीम इत्यादि। प्रसिद्ध विद्वान चरक ने तो हरेक प्रकार के औषधीय पौधों का विश्लेषण करके बीमारियों में उपचार हेतु कई अनमोल किताबों की रचना तक की जिसका प्रयोग आजकल मानव का कल्याण करने के लिये किया जा रहा है।

औषधीय पौधों के व्यवसायिक उत्पादन के रूप

जब प्राकृतिक रूप से अत्यधिक विदोहन के कारण ये औषधियाँ विलुप्ति की ओर होती हैं, तो इनके संरक्षण के लिये इनका कृषिकरण आवश्यक हो जाता है इसलिये इनका कृषिकरण किया जाना अतिआवश्यक है। औषधीय एवं सुगन्धित पौधों के कृषिकरण को प्रदेश में बढ़ावा देने के लिये उत्तराखण्ड सरकार द्वारा नई नीतियाँ प्रतिपादित की हैं साथ ही जड़ी-बूटी कृषकों का पंजीकरण, उत्पाद के निकासी नियमों का सरलीकरण, जड़ी-बूटी मण्डियों में विपणन आदि की व्यवस्था, काश्तकारों एवं उद्योगों के हितों को ध्यान में रखते हुये की गई है। इसके अलावा राज्य सरकार ने प्रदेश में वृहद स्तर पर कृषिकरण हेतु 26 महत्वपूर्ण प्रजातियों को चयनित किया है तथा इनके कृषिकरण पर कुल लागत का 50 प्रतिशत अनुदान देने का निश्चय किया है।

सुझाव व निष्कर्ष

जैव-विविधता की दृष्टि से कुमाँऊ हिमालय बागेश्वर प्रसिद्ध है। यहाँ अतीस, वन ककड़ी, कुटकी, वन हल्दी, थुनेर, मीठा विष, जटामासी समेत कई दुर्लभ जड़ी-बूटियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। अनियंत्रित दोहन के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है। वैश्वीकरण ने जिस तरह इन पौधों की जैव-विविधता को नुकसान पहुँचाया है यदि

यह नहीं रोका गया तो भविष्य में इसके भयानक दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। 71 प्रतिशत वन भूभाग वाला उत्तराखण्ड जैव-विविधता के लिये मशहूर है। यहाँ अतिशय, वन ककड़ी, गंदरायणी, कुटकी, वनहल्दी, जटामासी, आदि कई दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ बहुतायत रूप में मौजूद हैं जिनका किसी न किसी रूप में औषधीय महत्व है। लम्बे समय से बड़े पैमाने पर इन वनस्पतियों का अनियंत्रित दोहन हो रहा है। इस कारण इन वनस्पतियों के ऊपर संकट मंडरा रहा है। गोविन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थान कोसी, कटारमल (अल्मोंड़ा) के जैव-विविधता संस्थान संरक्षण एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई.डी. भट्ट ने प्रदेश के लिये इस प्रकार की चिंता जताई है और कहा है कि वनस्पतियों का अनियंत्रित दोहन से इन वनस्पतियों की स्थिति चिन्ताजनक है और इससे जैव-विविधता को भारी नुकसान पहुँच रहा है।

मध्य हिमालय की गोद में स्थित बागेश्वर जनपद एक पर्वतीय क्षेत्र है। यह क्षेत्र वन सम्पदा के साथ-साथ वनौषधियों से भी परिपूर्ण है। कुछ मूल्यवान जड़ी-बूटियों का पता लगाने के पश्चात् इनको औषधीय के रूप में परिणत किया जा चुका है, किन्तु अभी ऐसे बहुत सी मूल्यवान जीवनदायी जड़ी-बूटियों की दिशा में आगे खोज की आवश्यकता है तथा अत्यंत उपयोगी बहुमूल्य जड़ी-बूटियों का पता लगाना अभी शेष है। इस दिशा में भी खोज का काम एक मिशन के रूप में चलाया जाय तो आशातीत परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। अब जड़ी-बूटियों के दोहन में परिवर्तन हो रहा है। जनपद गठन से पूर्व निकासी का कार्य ठेकेदारी प्रथा से होने के कारण बहुमूल्य एवं दुर्लभ संपदा की उपेक्षा होती रही है जिससे इस क्षेत्र के विकास को भी बाधा पहुँची है। इसके अतिरिक्त इस प्रथा के कारण अमूल्य जड़ी-बूटियाँ विलुप्त हो गई हैं। इस पर्वतीय प्रदेश के लिये अपनी सम्पदा का सही उपयोग करते हुये उससे समुचित लाभ प्राप्त करने के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन, समय-समय पर कार्यशालाओं का आयोजन तथा क्षेत्र विशेष में पाई जाने वाली औषधीय पौधों का मानचित्रण किया जायें तो बेहतर तरीके से औषधीय पौधों का मूल्यांकन और वितरण को दिखाया जा सकता है जिससे आने भविष्य में हम तुरंत उस पर बेहतर योजना का क्रियान्वयन कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Pandey, N.C., Bhatt, D., Arya, D., Chopra, N., Upreti, B.M., Joshi, G.C., Tiwari, L.M. (2017), Diversity of ethno-medicinal plant: A case study of Bageshwer district of Uttarakhand. Journal of Meditatorial plants studies, 1: 1.
2. शर्मा, डी. ए. (2000), मादक पदार्थ-उपयोग एवं दुरुपयोग, वैज्ञानिक, अंक (4), पृ.-5।
3. मणि, डी. डी. (2000), कचरे से कंचन की असीम संभावनायें, वैज्ञानिक, अंक (4), पृ.-5।
4. मैठाणी, प्रो. डी. डी. (2010), उत्तराखण्ड का भूगोल (दसवाँ संस्करण), इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन, पृ.128।
5. बलोदी, डॉ. रा. प्र. (2015), उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोष (तृतीय संस्करण), देहरादून-उत्तराखण्ड: विनसर पब्लिशिंग कं., पृ. 191।
6. त्रिपाठी, के. न. (2021), उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन (द्वादश संस्करण), प्रयागराज, बौद्धिक प्रकाशन, पृ.225।
7. ओझा, एस. के. (2019), भारत का भूगोल (त्रयोदश संस्करण), प्रयागराज, बौद्धिक प्रकाशन, पृ.-306।
8. रावत, न. (2021), उत्तराखण्ड ईयर बुक (उन्नीसवाँ संस्करण), 8, प्रथम तल, के.सी. सिटी सेन्टर, 4, डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून: विनसर पब्लिशिंग कं0, पृ.-468।
9. दास, वी.पी. (2007), औषधीय एवं सुगंध पौधे उत्तराखण्ड द्वारा चयनित 26 मुख्य प्रजातियाँ, एलाईड प्रिन्टर्स, देहरादून, निदेशक जड़ी-बूटी शोध एवं विकास संस्थान, गोपेश्वर (चमोली)।
10. भट्ट, आई. डी. (2021), गोविन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थान कोसी, कटारमल (अल्मोंड़ा) के जैव-विविधता संस्थान संरक्षण एवं प्रबंधन विभाग ब्यूरो रिपोर्ट, अल्मोंड़ा।
